PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 7, ISSUE 4

मादक द्रव्य व्यसन और सामाजिक समस्याएँ

डॉ. हर्षद आर. ठक्कर

समाजशास्त्र विभाग
सी. यू. शाह आर्ट्स & कॉमर्स कोलेज,
अहमदाबाद गुजरात

मानव एक सामाजिक-सांस्कृति प्राणी होने के कारण अनेक समस्याओं, तनावों, कुंठाओं, विषादों और चिन्ताओं आदि से घिरा रहता है । इन चिन्ताओं से विमुक्ति के कुछ मार्ग समाज-सम्मत हैं, तो कुछ अन्य असामाजिक मार्ग हैं । समाज-सम्मत मार्ग व्यक्ति को उसकी वास्तविकात से परिचित कराते हैं और सका उचित मार्ग-दर्शन करते हैं, किन्तु इनका मार्ग दुष्कर व दुस्साध्य होता है, दूसरी ओर चिन्ताओं और तनावों से क्षणिकमुक्ति असामाजिक-पथ का अनुसरण करने से भी व्यक्ति को मिल जाती हैं । इनमें मादक द्रव्यों को लिया जा सकता है, ये मादक द्रव्य कुछ समय के लिए व्यक्ति के मानसिक तनाव को कम कर देते हैं; चिन्ता, विषाद, कष्ट और यहाँ तक कि व्यक्ति की मनोदशा को भी परिवर्तित कर देते हैं जिससे अस्थाई शान्ति, उल्लास, आनन्द मिलता हैं ।

अनेक वर्षो से इन मादक द्रव्यों का उपयोग व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है - गाँजा, चरस, अफीम, कोकीन और भाँग आदि अनेक प्रकार के मादक पौधों के पत्ते औषधि के रूप में भी काम में आते हैं । ऋग्वेद में 'सोमरस' का वर्णनअनेक स्थलों पर मिलता है । मुस्लिम शासनकाल से पूर्व भी भाँग का वर्णन मिलता है; अफीम, गाँजा, चरस आदि का सेवन स समय आनन्द, उन्माद, उल्लास और मानसिक व शारीरिक सुख के लिए किया जाता था । बौद्धकाल के जातक ग्रन्थों में भ इनका परिचय मिलता है किन्तु यह सर्वथा सत्य

है कि सभी युगों में मादक द्रव्यों के प्रचलित होने के उपरान्त भ भारतीय संस्कृति में इन्हें कभी स्वीकारा नहीं गया; सदैव इनकी अवहेलना ही की गई है क्योंकि इनके अनेक दुष्प्रभाव हैं जो व्यक्ति को निष्क्रिय कर देते हैं । मादक द्रव्यों के दुष्प्रभाव, कारण व दुरुपयोग आदि जानने के पूर्व मादक द्रव्यों का अरथ व परिभाषा जानना आवश्यक हैं ।

मादक द्रव्य का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Drugs) - मादक द्रव्य अंग्रेजी के 'ड्रग्स' शब्द का रूपान्तरण है जो नशीली दवा को द्योतित करता है । वास्तव में मादक द्रव्य एक ऐसा रसायनिक पदार्थ है जो व्यक्ति के कार्यो और प्रक्रियाओं को प्रभावित करता हैं । अंग्रेजी में इसे संवेदन मंदक औषधि (नारकोटिक ड्रग्स) भी कहा जा सकता है । हिन्दी में ड्रग्स का अर्थ औषधि है जो चिकित्सक द्वारा किसी रोग के निदान के लिए निर्दिष्ट की जाती है । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो मादक द्रव्य या 'ड्रग्स' एक ऐसा रसायनिक पदार्थ है जो व्यक्त के मस्तिष्क एवं स्नायुमण्डल को प्रभावित करता है । समाजशास्त्रीय दृष्टि से आदत-निर्माण के लिए इसका उपयोग किया जाता है । सारांशतः देखा जाए तो मादक द्रव्य एक ऐसा रसायनिक पदार्थ है जो व्यक्ति के मनोमस्तिक और चेतना को प्रभावित करता है और व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हानिकारक हैं ।

मादक द्रव्य के साथ 'दुरुपयोग' अथवा 'एब्यूज' शब्द जुड़ा है जिसका अर्थ है - उस मादक द्रव्य का सेवन जो शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से हानिकर है । 'मादक द्रव्यों का दुरुपयोग' से ही मिलता-जुलता एक शब्द है । 'मादक द्रव्यों का व्यसन' अथवा 'ड्रग एडिक्शन' । इसका अर्थ है - उन्माद की वह अवस्था जो किसी नशीली औषधि के निरन्तर प्रयोग से उत्पन्न होती है । 'व्यसन' शब्द वास्तव में 'शारीरिक निर्भरता' की स्थिति को इंगित करता है जिसका अर्थ है कि शरीर-संचालन के लिए मादक द्रव्यों का नियमित प्रयोग किया जाए, अन्यथा शरीर-संचालन बाधित हो जाएगा । मुख्य रूप से इसके निम्न लक्षण हैं - (1) मादक द्रव्यों के सेवन की उत्कृष्ट इच्छा और हर सम्भव साधन द्वारा उन्हें प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय, (2) इन द्रव्यों की खुराक निरन्तर बढ़ाने की प्रवृत्ति, और (3) इन द्रव्यों के प्रभाव के फलस्वरूप मानसिक अथवा शारीरिक निर्भरता ।

इस तरह 'व्यसन' शब्द मुख्यतः शारीरिक - निर्भरता को इंगित करता है, जबकि 'दुरुपयोग' अनुचित पदार्थों के सेवन को दर्शाता है जिसका प्रयोग शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से हानिकर होता है । शराब, हशीश, कोकीन, एल.एस,डी., हेरोइन व गाँजा आदि का सेवन करना शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से अहितक है क्योंकि इनके अनेक दुष्परिणाम होते हैं । संयुक्त राष्ट्रसंघ के विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 'मादक द्रव्यों के दुरुपयोग' को विश्वव्यापी समस्या माना है और इसे नियंत्रित करने के लिए युद्धस्तर का अभियान चलाया है । अब इसे सामाजिक समस्या का रूप दिया गया है इस कारण स समस्या के नियंत्रण और निराकरण के पूर्ण प्यास किए जा रहे हैं । अब आगे इन मादक द्रव्यों के विषय में विस्तार से जानकारी प्राप्त की जाएगी ।

मादक द्रव्यों के प्रकार एवं प्रभाव (Types and Effects of Drugs) - मादक द्रव्यों को मुख्य रूप से निम्नलिखित विभागों में रखा जा सकता है -

(1) उत्तेजक मादक द्रव्य
(2) निष्चेतक
(3) अवसादक मादक द्रव्य
(4) भ्रान्तिजनक अथवा मायिक मादक द्रव्य

(1) उत्तेजक मादक द्रव्य (Stimulant Drugs)

कोकीन एम्फीटामाइन, मैथेड्रीनडेक्सीड्रीन एवं कैफीन दि को उत्तेजक पदार्थो की कोटि में रखा जाता है क्योंकि ये द्रव्य निद्रा को दूर भगाते हैं, उदासी को दूर करते हैं, शारीरिक ऊर्जा की वृद्धि करते हैं, स्नायुमण्डल को क्रियाशील बनाते हैं । ऐसा प्रतीत होता है व्यक्ति सक्रिया, चुत्स व फुर्तीला हो गया है, चित्त प्रसन्न हो गया है । इस प्रकार ये मादक द्रव्य थकान को कम करके शरीर में स्फूर्ति लाते हैं । किन्तु इनके सेवन की मात्रा यदि कम है तभी ये व्यक्ति को सक्रिय रखते हैं । यदि इनके सेवन की मात्रा में वृद्धि कर दी जाती है तो इनका प्रभाव मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भयावह हो जाता है --इन पदार्थो का सेवन प्रायः मौखिक अथवा इंजेक्शन द्वारा किया जाता है जिसे अकस्मात बन्द कर देने से मानसिक अवसाद उत्पन्न हो जाता है ।

(2) निश्चेतक मादक द्रव्य (Narcotic Drugs)

अफीम, बारबिच्युरेट्स, भाँग, चरस, हेरोइन आदि मादक द्रव्यों को निश्चेतक मादक द्रव्य कहा जाता है । ये द्रव्य प्रायः अफीम के ही रूप हैं और पौधों से प्राप्त होते हैं । भाँग, गाँजा और चरस आदि का सेवन व्यक्ति को उनींदा बना देता है, चिन्ता समाप्त हो जाती है, उदासी और विषाद दूर होता है और व्यक्ति प्रसन्नचित दिखाई देता है । हेरोइन जो मार्फीन से निर्मिता है - सफेद पाउडर के रूप में मिलता है, इसे व्यक्ति तरल द्रव्य के रूप में इंजेक्शन के द्रावालेता है अथवा कश के रूप में भी सेवन करता है । अफीम, गाँजा, चस आदि को व्यक्ति नाक से ऊपर की ओर कींचता है अथवा चिलम का सहारा लेकर इनका सेवन करता है । इन सभी द्रव्यों के प्रभाव से व्यक्ति को भूख नहीं लगती है और अफीम जैसा प्रभाव व्यक्ति पर डालते हैं ।

(3) अवसादक मादक द्रव्य (Depressants)

शान्तिदायक अथवा पीड़ाशामक मादक द्रव्य इस कोटि में आते हैं जिनके प्रभाव से व्यक्ति सोने की इच्छआ करता है । ये व्यक्ति के केन्द्रिय स्नायुमण्डल पर इस प्रकार का प्रभाव डालते हैं कि वह अशक्त-सा अनुभव करता है । बारबिच्युरेट्स (नेम्बुटाल, सिकोनाल, सीडियम एमिटाल और सेनोरिल आदि) मादक द्रव्य इसी प्रकार के प्रभावकारी हैं । इनके सेवन से व्यक्ति आलसी, चिड़चिड़ा और उदासी नहो जाता है क्योंकि ये पदार्थ व्यक्ति की माँसपेशियों की क्रियागति को कम कर देते हैं । अनेक बार शल्य चिकित्सा के पूर्व और बाद में इनका प्रयोग रोगी को आराम देने की दृष्टि से किया जाता है ।उच्च-रक्तचाप और मिरगी जैसी बीमारी में रोगी को आराम देने के लिए इनका प्रयोग होता है किन्तु निर्धारित मात्रा से अधिक खुराक के रूप मं इनका प्रयोग भयावह होता है । इस स्थिति में व्यक्ति असहाय, निष्क्रिय और शिथिल हो जाता है ।

(4) भ्रान्तिजनक अथवा मायिक मादक द्रव्य (Hallocinogens)

इन मादक द्रव्यों में एल.एस.डी. प्रमुख है जिसके प्रयोग से व्यक्ति वास्तविकता से दूर चला जाता है, दिन में स्वप्न देखने लगता है । एल.एस.डी. इतना शक्तिशाली रसायनिक द्रव्य है कि नमक के दाने के बराबर इसकी मात्र भी व्यक्ति के स्नायुमण्डल में प्रतिक्रिया उत्पन्न कर देती हैं, मानसिक रूप से व्यक्ति प्रभावित हो जाता है । इसे मौखिक रूप से

पाउडर के रूप में लिया जाता है अथवा तरल पदार्थ के रूप में भी इसका सेवन किया जाता है । इसका असर 8-10 घण्टे तक रहता है और आदत पड़ जाने के बाद इसे न लेने से व्यक्ति मानसिक तौर पर असंयमित हो जाता है, गहरे अवसाद में डूब जाता है और हर सम्भव स्तर पर उसे प्राप्त करना चाहता है । इस मादक द्रव्य में आदत डालते वाले गुण प्रचुर मात्र में हैं ।

इन सबके अतिरिक्त शराब और निकोटीन भी मादक द्रव्यों की श्रेणी में आते हैं, जिनका प्रयोग बहुतायत से किया जाता है ।

शराब - यह एक ऐसी आदत बन जाती है कि व्यक्ति उसे लेने के लिए विवश हो जाता है । कुछ लोग थकान और मन की उदासी को दूर करने के लिये लेते है तो कुछ स्वयं को मुक्त अनुभव करने के लिए अथवा उत्साह, उमंग और उत्तेजना के रूप में इसे ग्रहण करते हैं । इसका प्रभाव यह होता है कि तनाव शान्त होता है, निर्णय-क्षमता मन्द हो जाती है । यह पीड़ाशामक होती है, विवेक का क्षय होता है । इसके सेवन के परिणामस्वरूप हृदय-रोग की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं, आँतों को नुकसान पहुँचता है व अनेक शारीरिक रोग उत्पन्न होने लगते हैं ।

निकोटीन (Nicotine) निकोटीन द्रव्यों में बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू और सिगाए आदि को लिया जाता है । इन द्रव्यों का अत्यधिक सेवन व्यक्ति के हृदय, फेफड़े व श्वासनली को प्रभावित करता है जिससे अनेक भयावह बीमारियाँ, जैसे-हृदय-रोग, अस्थमा और कैंसर तक हो जाते हैं । येपदार्थ केन्द्रीय सन्युमण्डल में उत्तेजना पैदा करते हैं और व्यक्ति इन पर आश्रित हो जाता है, इसी कारण डोक्टर इन्हें न लेने की सलाह देते हैं ।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त वर्णित सभी मादक द्रव्य व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए हानिकर हैं क्योंकि ये दुष्परिणामजनक हैं । अनेक शोधों से यह निष्कर्ष निकलता है कि - (1) इन मादक द्रव्यों के सेवन की आदत व्यक्ति को हो जाती है और वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से उसे प्रभावित करते हैं, जैसे - भूख न लगना, कार्य क्षमता में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाना, वजन का कम होना, अपने तक ही सीमित रहना और अनैतिक और असामाजिक कार्य करने लगना, (2) जब व्यक्ति इन मादक द्रव्यों के सेवन का

आदि हो जाता है तो इनका त्यागना दुष्कर हो जाता है और उसके उपचार में भ अनेक कठिनाइयाँ आती हैं क्योंकि व्यक्ति को बेचैनी का अनुभव होता है, पसीना आता है, पेट में दर्द होता है, कमजोरी आ जाती है, सिर-दर्द, रक्तचाप का कम होना, उल्टी आना जैसी अनेक परेशानियाँ उत्पन्न हो जाती है । इस तरह इनके अनेक दुष्प्रभाव व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक रूप से सहने होते हैं ।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के कारण (Causes of Drug Abuse) प्रश्न यह है कि व्यक्ति इन मादक द्रव्यों का दुरुपयोग क्यों करता है ? जे. एत. विल्स, जो इंग्लैंड के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक हैं - निम्नलिखित कारण प्रभावी मानते हैं -

(1) **मनोवैज्ञानिक कारण (Psychological Cause)**

जिन व्यक्तियों का सांवेगिक विकास अपूर्ण होता है; अतिसंवेदनशील होते हैं; स्वावलम्बी नहीं हैं; स्वयं को अयोग्य, अकुशल और कमजोर समझते हैं और सुप्त व्यक्तित्व वाले हैं, वे इन मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करते हैं क्योंकि ये द्रव्य उनके तनाव, संघर्ष और आलस्य को कम करते हैं, अवसाद को शान्त करते हैं, उनके कौतूहल और आनन्द को जागृत करते हैं और उनकी अनुभूति को तीव्रता प्रदान करते हैं ।

(2) सामाजिक कारण (Social Cause)

जिन समाजों में मादक द्रव्यों के सेवन को स्वीकृति प्राप्त है, उसे उच्च प्रतिष्ठा माना जाता है, सांस्कृतिक और धार्मिक स्वीकृति प्राप्त है और इन्हें आध्यात्मिक चिंतन और मनन का उत्प्रेरक माना जाता है वहाँ इनका प्रचलन अधिक है क्योंकि वहां मित्रों द्वार इसे स्वीकार किया जाता है और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक माना जाता है ।

(3) शारीरिक कारण (Physical Cause)

सुखानुभूति की आकांक्षा, मनोदशा-परिवर्तन, उदासी व विषाद को कम करना और स्वयं में उत्तेजना पैदा करने के लिए भी इन मादक द्रव्यों कादुरुपयोग किया जाता है । ये पदार्थ दुःख निवारक, निद्रा लाने वाले, काम-भावना को उत्तेजित करने वाले और निराशा की समाप्ति कर अवर्णनीय आनन्द की सृष्टि करते हैं ।

(4) सुगमता से उपलब्ध (Easily Available)

इन मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का एक कारण यह भ है कि सामाज में इनकी उपलब्धि सुगमता से हो जाती है । प्राचीन समय से ही अफीम, गाँजा, चरस, बीड़ी. शराब और मार्फीन जैसे द्रव्य सरलता से व्यक्तियों को उपलब्ध होते रहे हैं । व्यक्तिगत समस्याओं के हल व स्वयं को उत्कृष्ट बनाने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है ।

वास्तव में इन मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की प्रेरणा के अनेक कारण हो सकते हैं ।इन कारणों को चार समूहों में विभाजित किया जा सकता है, जिन्हें कारण सम्बन्धी सिद्धान्त कहा जाता है ।

(1) शारीरिक सिद्धान्त (Physical Theory)

इस सिद्धान्त को मोरडोन्स, स्लिकवर्ध, रैन्डाल्फ और निमविच ने प्रतिपादित किया था । इसे 1910 और 1920 के दशकों में स्वीकार किया गया था । इस सिद्धांत की मान्यता है कि शारीरिक रोगों और दोषों के कारण तथा मादक द्रव्यों के रासायनिक गुणों का शरीर पर अनुकूल प्रभाव पड़ने के कारण । व्यक्ति इनका सेवन करते हैं । इस सिद्धान्त को मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्री नहीं मानते हैं क्योंकि शारीरिक सिद्धान्त आनुभविक तथ्यों एवं प्रमाणों पर आधारित नहीं हैं ।

(2) मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त (Psychological Theory)

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से सम्बन्धित चार मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है जो निम्न प्रकार हैं (चार्ट - 1)

2.1 प्रबलीकरण का सिद्धान्त (Theory of Reinforcement)

इसे अब्राहम विलकर ने विकसित किया । इस सिद्धान्त के आधार पर प्राणी आनन्द पैदा करने वाली तथा पीड़ा को दूर करने वाली क्रियाओं को दोहराते रहते हैं अर्थात् मादक द्रव्यों की सुखद अनुभूतियाँ उनके उपयोग को बढ़ाती हैं, इन्हें प्रबलीकरण की क्रियाएँ कहा जाता हैं ।

2.2 व्यक्तित्व का सिद्धान्त (Theory of Personality)

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक और समर्थक चेन, नाइट और रोबर्ट फ्रीड बेल्स हैं । इस सिद्धान्त के अनुसार मादक द्रव्यों के सेवन का कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व सम्बन्ध कुछ विशिष्ट व प्रभेदक लक्षण हैं । यह लक्षण मुख्य रूप से 'आश्रित व्यक्तित्व' का होना है । इस प्रकार के व्यक्ति अपरिपक्व व्यक्तित्व के होते हैं । रोबर्ट फ्रीड बेल्स ने इस सिद्धान्त का विकास किया ।

2.3 शक्ति सिद्धान्त (Power Theory)

डेविड मैक्येलेण्ड ने शक्ति के सिद्धान्त का विकास किया । इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति उन संघर्षो को सुलझाने के लिए मादक द्रव्यों का सेवन करता हैं, जो समाज द्वार स्वीकृत शक्ति प्राप्त न कर सकने के कारण उसमें उतपन्न होते हैं । एक सामान्य रूप से मादक द्रव्यों को सेवन करने वाला व्यक्ति इसके सेवन से सामाजिक शक्ति की सुखद अनुभूति प्राप्त करता है जबकि अत्यधिक मादक द्रव्यों का सेवन करने वाला व्यक्ति शक्ति की आवश्यकता के कारण आदत से मजबूर होकर उनका सेवन करता है ।

2.4 क्षीण 'स्व' का सिद्धान्त ('Weakened 'Self' Theory)

स्टैन्टन पीले ने मादक द्रव्यों के सेवन के लिए वह स्थिति उत्तरदायी मानी है जिसमें व्यक्ति के कार्य निष्पन्न करने तथा समाज के साथ निपटने के लिए शक्ति-चेतना नहं पाई जाती और व्यक्ति बाह्य सहारे के साथ प्राश्रयता का सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता का अनुभव करता है ।

उपर्युक्त सभी सिद्धान्त अपूर्ण माने जाते हैं क्योंकि - (1) ये सिद्धान्त यह स्पष्ट नहीं कर पाते कि ये संलक्षण (Syndromes) मादक द्रव्यों के सेवन को ही क्यों उत्पन्न करते हैं किसी अन्य व्यवहार को क्यों नहीं, (2) ये सिद्धान्त व्यक्तित्व के उन लक्षणों की पहचान में असफल रहे हैं जो केवल मादक द्रव्यों के सेवन करने वालों मे ही पाए जाते हैं, (3) जो

व्यक्तित्व सम्बन्धी ल7ण मादक द्रव्यों के सेवन करने वालों में पाए जाते हैं, वे वास्तव में कारण न होकर उसके परिणाम भ हो सकते हैं ।

(3) सामाजिक – मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त (Socio-Psychological Theory)

इसमें नामांकन का सिद्धान्त विकसित किया गया है । हावर्ड बेकर और इरिक्सन ने इस सिद्धान्त में स्पष्ट किया है कि कोई व्यक्ति मादक द्रव्यों के सेवन करने वाले का लेबल लग जाने के दबाव के कारण ही दुरुपयोगी बन जाता है । अर्थात् सामाजिक नियमों से विचलन उन व्यक्तियों की क्रियाओं में नहीं होता जिन्हें 'विचल व्यक्ति' के रूप में पहचाना जाता है, परन्तु यह विचलन देखने वालों की आँखों मं होता है तथा उस विधि में होता है, जिसके द्वारा किसी एक विशेष व्यक्ति की क्रियाओं का मूल्यांकन किया जाता है । इस सिद्धान्त का दोष यहहै, कि व्यक्ति मादक द्रव्यों का सेवन करना प्रारम्भ ही क्यों करते हैं ? यह इस बात का स्पष्टीकरण नहीं करता ।

(4) समाजशास्त्रीय सिद्धान्त (Sociological Theory)

यह सिद्धान्त मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के कारण सामाजिक परिस्थितियों एवं सामाजिक व्यवस्था में खोजता है । इनके अनुसार सामाजिक कारक व्यक्ति को मादक द्रव्यों का व्यसनी बनाते हैं । इस सिद्धान्त के प्रमुख प्रकार अग्र हैं -

4.1 सामाजिक सीख का सिद्धान्त (Theory of Social Learning)

इस सिद्धांत के प्रतिपादक एकर्स और बर्जेस हैं । यह सिद्धान्त दो सिद्धान्तों - विभिन्न समप्रक सिद्धान्त और प्रबलीकरण सिद्धान्त - का विस्तृत रूप है । प्रबलीकरण की प्रक्रिया मादक द्रव्यों की सुखद अनुभूतियाँ उसके उपयोग में वृद्धि करती हैं । यह एक प्रकार से प्रतबिद्ध सीखना है । सामाजिक सीखा का सिद्धान्त सीखने की प्रक्रिया में कार्य करने बाले बलयुक्तकर्ता जोर देने वालों के सामाजिक स्त्रोतों की भी भूमिका मानता है, जो मादक द्रव्यों के सेवन के पक्ष में होते हैं वे प्रबलीकरण करते हैं और नए व्यक्ति को सेवन करने के लिए जोर डालते हैं । व्यकति सेवन करने से सुख की अनुभूति करता है और धीरे-धीरे व्यसनी बन जाता है । यही सामाजिक सीख का सिद्धान्त है । यह सिद्धान्त ये स्पष्ट नहीं करता कि व्यक्ति ऐसे लोगों से सम्पर्क बढ़ाता ही क्यों हैं ?

4.2 तनाव सिद्धान्त (Strain Theory)

इस सिद्धान्त के समर्थक मर्टन हैं । आपके अनुसार दबाव या तनाव का कारण लक्ष्यों और साधनों के बीच विसंगति है । जब व्यक्ति अपनी संस्कृति द्वारा मान्य लक्ष्यों को संस्था या समाजद्वार मान्य साधनों से पूर्ण नही कर पाता है तो वह हताश हो जाता है और परेशान होकर मादक द्रव्यों का सेवन करना प्रारम्भ कर देता है आगे चलकर वह व्यसनी बन जाता है । मर्टन ऐसे हताश, असफल, नाकामयाबों को पलायनवादी की संज्ञा देता है ।

4.3 उप-संस्कृति का सिद्धान्त (Theory of Sub-Culture)

व्यक्ति समाज में व्यवहार करता है । इस व्यवहार का मूल्यांकन बाहरी समूह करता है कि व्यवहार समाज सम्मत है अथवा समाज-विरोधी (विचलित) है । विचलन का निर्णय थोपा जाता है । एक समूह किसी व्यवहार को समाज-सम्मत मानता है तो दूसरा समूह विचलित या समाज विरोधी । जब व्यक्ति देखता है कि जो लोग मादक द्रव्यों का सेवन करना बुरा बताते हैं, वे स्वयं उनका सेवन करते हैं तो वह ऐसे लोगों को पाखण्डी मानता है । व्यक्ति ऐसे झूठे मूल्यों का विरोध करता है तथा मादक द्रव्यों का सेवन प्रारम्भ कर देता है । इस प्रकार से दो उप-संस्कृतियों के मूल्यों में संघर्ष के परिणामस्वरूप लोग मादक द्रव्यों के व्यसनी बन जाते हैं । यही उप-संस्कृति का सिद्धान्त हैं ।

संदर्भः

1. भारतीय समाज - मुद्दे और समस्याएँ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. W.w.w.google.search samajik samsahye.